ISSN 2454 - 5163

26 जुलाई 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 39, अंक 1, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री दिगम्बर जैन अतिशयक्षेत्र बंधाजी, जिला–टीकमगढ (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (444)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com
ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7000
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10000

स्वसमय ही सुखरूप है

आत्मा ज्ञानानन्द स्वरूप 'समय' है, उसे कर्म के निमित्त से सम्बन्ध की अपेक्षा आने से परिणमन में विकार उत्पन्न हो जाता है। यही विसंवाद है और दुःख उत्पन्न करने वाला है। समय के (आत्मा के) एकपना प्रगट है, तो भी वह एकपने में स्थित न रहने से (उसके सम्मुख न होने से) कर्मों के प्रदेशों में स्थित होता है अर्थात् राग-द्वेष में एकपना करता है, वह परसमयपना है और वही विसंवाद है, दुःख है, अनंत संसार का मूल है। भले ही ऐसा माने कि हम सुखी हैं, किन्तु यह तो उनकी अज्ञानता है।

स्वसमय परिणमे - यह तो सुन्दर है; किन्तु जहाँ परसमयरूप से परिणमन हुआ, वहीं एक में दूसरी बात आ गई। एक जीव नाम का समय, उसको स्वसमयरूप व परसमयरूप द्विविधपना कैसे हो? नहीं हो सकता। दोपना अनादि से स्वयं ने प्रगट किया है। अपने आत्मा को छोड़कर शुभराग या अशुभराग के साथ एकत्वपना किया, यह दोपना है, यह परसमय है और अपने शुद्ध आत्मा के साथ एकत्वपने निर्मल परिणमे, वह स्वसमय है, सुन्दर है।

- प्रवचनरत्नाकर, भाग-1 पृष्ठ 64

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् - 2546) 444 अंक : 1

आकुल रहित होय...

आकुल रहित होय इमि निशिदिन, कीजै तत्त्वविचारा हो।
को मैं कहा रूप है मेरा, पर है कौन प्रकारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।1।।

को भवकारण बन्ध कहा को, आस्रव रोकनहारा हो।
खिपत कर्म बन्धन काहे सों, थानक कौन हमारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।2।।

इमि अभ्यास किए पावत है, परमानन्द अपारा हो।
'भागचन्द' यह सार जान करि, कीजै बारम्बारा हो।।
आकुल रहित होय... ।।3।।

- कविवर पण्डित भागचन्दजी

20वाँ वीर देशना बाल युवा संस्कार ई शिक्षण शिविर संपन्न

कानपुर (उ.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत स्व.मीनादेवी धर्मपत्नी श्री केशवदेव जैन कानपुर की स्मृति में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कानपुर द्वारा आयोजित 20वाँ वीर देशना बाल युवा संस्कार ई शिक्षण शिविर दिनांक 14 से 21 जून तक सानन्द संपन्न हुआ।

दिनांक 14 जून को श्री बसंतभाई दोशी की अध्यक्षता एवं श्री मणिकांतजी कानपुर, श्री संजीवजी कानपुर, डॉ. अनुपमजी कानपुर व श्री प्रदीपजी कानपुर की उपस्थिति में भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। समारोह में पण्डित राजकुमारजी जबलपुर का उद्बोधन प्राप्त हुआ। सभा का संचालन पण्डित आशीषजी टीकमगढ द्वारा किया गया।

शिविर में प्रात: जिनेन्द्र-पूजन एवं कक्षाओं का आयोजन हुआ, दोपहर में पाठ्यक्रम की कक्षाएं लगी, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, सामूहिक कक्षा तथा रात्रि में रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सायंकालीन सामूहिक कक्षा में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित विरागजी जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई ने जिनागम के गूढ विषयों को सरलतम भाषा में समझाया। कक्षा अध्यापक के रूप में पण्डित अनुभवजी, पण्डित सुदीपजी, पण्डित आशीषजी, डॉ. विवेकजी, पण्डित अभिषेकजी, पण्डित उर्विशजी, पण्डित साकेतजी, विदुषी श्रुति, विदुषी श्रेया का योगदान रहा।

शिविर में देश-विदेश के लगभग 3000 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। दिनांक 21 जून को अनेक साधर्मियों ने परीक्षा दी। सायंकालीन समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता श्री अनंतराय शेठ मुम्बई ने की। साथ ही श्री रजतजी जैन कानपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री प्रदीपजी जैन कानपुर, श्री अशोकजी जबलपुर आदि का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का मांगलिक उद्बोधन मिला। कार्यक्रम का संचालन पण्डित अभयजी खैरागढ ने किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया; सह-निर्देशक के रूप में आशीषजी टीकमगढ, अभयजी खैरागढ, ज्ञायकजी वसई, डॉ. विवेकजी इन्दौर का सहयोग प्राप्त हुआ। तकनीकी सहयोग जैनेक्स्ट टीम का प्राप्त हुआ।

आवश्यक सूचना

जो पाठकगण वीतराग-विज्ञान (मासिक) ईमेल पर भी मंगाना चाहते हैं, वे अपनी ईमेल आई. डी. भेजें – वाट्सअप नं. 9660668506 पीयूष कुमार जैन, व्यवस्थापक-वीतराग विज्ञान

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

दूसरा अध्याय

(गतांक से आगे ...)

हम सबका है सो उनका है अर उनका है हम सबका है।
जो उनके साथ गये भाई वे सब इस कुल के दीपक हैं।।
जो रहे शेष घर में भाई वे सब इकदम इस घर के हैं।
हम सब में एका रहे सदा क्योंकि हम सब इक घर के हैं।। २२।।

जबतक हम सब इस घर में हैं तबतक इस घर के हैं भाई।
जिनने घर छोड़ा वे सब तो श्री जिनवर पथ के हैं राही।।
जो शेष रहे सब बंधे रहें यह तो सौभाग्य हमारा है।
हम एक एक ही रहें सदा सारा परिवार हमारा है ।। २३।।

यह जग का सर्वश्रेष्ठ कुल है यह नाभिराय कुलकर का है।
हम सभी एक श्रेणी के हैं हम सब ही इसकी शोभा हैं।।
इस कुल के गौरव को भी तो हम सभी बढ़ाने वाले हैं।
आगे-पीछे हम सब भी तो मुक्ति में जाने वाले हैं ।। २४।।

हम सब मिलकर आदीश्वर के गौरव से गुंजित इस कुल को।
खण्डित ना होने देंगे हम मंडित रक्खेंगे इस कुल को।।
यह तीर्थंकर के गौरव से अर चक्रवर्ती के वैभव से।
अर कामदेव की सुन्दरता से मण्डित अन्तर्वैभव से ।। २५।।

इस गौरव को इस गरिमा को हमको संभालकर रखना है।
जबतक हम घर में रहें अरे गरिमा को कायम रखना है।।
पूज्य पिताश्री ऋषभदेव ने मुझे बनाया था राजा।
कामदेव बाहूबलि को उनने युवराज बनाया था ।। २६।।

और भाइयों को भी उनने यथायोग्य पद बाँटे थे।
और सभी को प्रेमभाव से रहने की शिक्षा दी थी।।
अब उनकी आज्ञा धारण कर हम प्रेमभाव से रहें सभी।
आपस में सब सुलझा लेवें मतभेद होय जब कभी-कभी।। २७।।

प्रेमभाव वात्सल्यभाव से रहें निरन्तर जीवनभर।
एक-दूसरे का आदर सन्मान करें हम जीवनभर।।
अरे एकता में अद्भुत शक्ति होती है इस जग में।
और सभी आजादी से रह सकते हैं सब हिल-मिलके।। २८।।

नहीं किसी पर किसी तरह का बन्धन, पूरी आजादी।
और सभी जन रहते हैं जीवनभर सुख-दुख के साथी।।
यदी बाँटते ऋषभदेव तो सौ खण्डों में बँट जाता।
श्री ऋषभदेव के भारत के फिर सौ-सौ टुकड़े हो जाते।। २९।।

कोई राजा स्वयं राज्य के टुकड़े कैसे कर सकता।
इसीलिये तो बड़े भाई को राजतिलक होता आया।।
और सभी उसके सहयोगी रहते आये हैं अबतक।
परम्परा तो इसीतरह की रहती आई है अबतक ।। ३०।।

बस यही किया ऋषभेश्वर ने जो अबतक होता आया है।
मिलजुलकर एक साथ रहकर हम सबने उसे चलाया है।।
पृथ्वी बँटती है नहीं कभी अर काम-धाम का बँटवारा।
होता आया यह अभी तलक है काम व्यवस्था का सारा।।३१।।

जैसे माँ-बाप नहीं बँटते वैसे ही राज्य नहीं बँटता।
संगठन नहीं विघटन होता यदी राज्य बाँटा जाता।।
हम सभी संगठित रहकर ही आगे-आगे बढ़ सकते हैं।
विघटित होकर तो एक कदम भी आगे ना बढ़ सकते हैं।। ३२।।

है आज हमारा भाग जगा हम चक्रवर्ति होने वाले।
अर पुण्योदय से अरे हमारे महाभाग जगने वाले।।
हम सब ही हैं अति ही प्रसन्न गौरव गरिमा से मण्डित हैं।
आनन्द मगन ही हैं हम सब हम जिनशासन के पण्डित हैं।। ३३।।

आज वृषभ का भारत यह जो भरतक्षेत्र कहलाता है।
यह है अखण्ड परचण्ड चण्ड सारे जग का उजियारा है।।
यह नहीं बटेगा खण्डों में सौभाग्य हमारा नारा है।
यह भारत तो हम सबका है यह भारत हमको प्यारा है।। ३४।।

हम सभी एक हैं एक रहें यह भरतभूमि हम सबकी है।
हम सब ही इसके पालक हैं यह भूमि अरे हम सबकी है।।
यह चक्ररत्न हम सबका है और सभी हम इसके हैं।
बँटवारे की मत बात करो सब एक एक बस एक ही हैं।। ३५।।

हम सभी ऋषभ के पुत्र और वे जनक अरे हम सबके हैं।
हम उनके हैं हम उनके हैं वे ही सर्वस्व हमारे हैं।।
वे परम पूज्य हैं जनक और हम उनके राज दुलारे हैं।
हम उनके हैं हम उनके हैं ऋषभेश्वर जनक हमारे हैं।। ३६।।

रे ऋषभ हमारे पिता और हम सब सन्तानें हैं उनकी।
उनकी जो गौरव गरिमा है वह ही है मानों हम सबकी।।
मेरे भाई सब मेरे हैं सब मेरे लिये महत्तम हैं।
सम्पन्न विविध विद्याओं से सचमुच वे सब सर्वोत्तम हैं।। ३७।।

अत्यन्त उल्लसित भावों से अपने अन्तर को प्रगट किया।
इसतरह सभी से नेह जताकर यथायोग्य सन्मान दिया।।
सब परिजन को सब पुरजन को अत्यन्त नेह से विदा किया।
'चक्ररत्न के स्वागत में सब आवें' – यह अनुरोध किया।। ३८।।

(दोहा)

इसप्रकार पूरण हुआ, पुत्र जन्म का पर्व।
अब कल होगा जान लो, चक्ररत्न का पर्व।। ३९।।

विजय यात्रा भरत की, अब होगी आरंभ।
मंगलमय मंगल रहे, उनका विजयारंभ।। ४०।।

–●–

तीसरा अध्याय

(दोहा)

किया भरत ने प्रथम ही, णमोकार का जाप।
फिर निज आतमध्यान धर, मेटे सब संताप।। १।।
ऋषभदेव जिनराज को, वंदन बारंबार।
फिर सब अपने काम में, लगा सभी दरबार।। २।।

(वीर)

सारा दरबार उपस्थित है सब अपने-अपने आसन पर।
और सभी के मध्य विराजे भरतराज सिंहासन पर।।
मंगलाचरण का पाठ सभी जन सबसे पहले करते हैं।
श्री ऋषभदेव के चरणों में वंदन अभिनन्दन करते हैं।। ३ ।।

अन्दर से इकदम शान्त भरत सबको समझाने लगते हैं।
श्री ऋषभदेव के नंत गुणों के गाने गाने लगते हैं।।
श्री ऋषभदेव के दिव्यज्ञान की गौरवगाथा गाते हैं।
एवं उनकी वीतरागता का स्वरूप समझाते हैं।। ४ ।।

'ऐसा न हो, अर ऐसा हो' – ऐसा कुछ भाव न उनको है।
जो कुछ जैसा हो रहा जहाँ वे सहज जानते रहते हैं।।
जिसको जैसा है भाव सहज वे उसे जानते हैं पूरण।
उसकी रग-रग को पहिचानें गहराई से जानें पूरण।। ५ ।।

सबके सभी परिणमन उनके सहज ज्ञान में हैं आते।
पर उनके दिव्यज्ञान को वे सब नहीं तरंगित कर पाते।।
कोई भी घटना दुर्घटना न उनको आकुल करती है।
रे उनका ज्ञान जलोदधि तो नित शान्त निराकुल रहता है।। ६ ।।

घटना-दुर्घटना सब जाने पर शान्ति न खण्डित होती है।
यह वीतरागता की महिमा जो उनको मंडित रखती है।।

सर्वज्ञ वीतरागी जिनवर वे नहीं किसी से जुड़ते हैं।
बस अपने में ही रहते हैं बस अपने में ही रहते हैं।। ७ ।।

वे भरतराज कुछ देर शान्त ऐसे ही कहते रहते हैं।
कुछ देर शान्त बैठे रहते फिर इकदम कहने लगते हैं।।
अब चलो सभी हम मिल-जुलकर आयुधशाला में चलते हैं।
अर चक्ररत्न का यथायोग्य विधिपूर्वक स्वागत करते हैं।। ८ ।।

फिर भरतक्षेत्र के छह खण्डों के नृपगण को अपनाने की।
तैयारी करते हैं मिलकर दिग्विजय यात्रा करने की।।
मंत्रीगण अर सेनापति मिल सब तैयारी में जुट जावें।
और बनावे कार्यक्रम फिर हमें सभी कुछ बतलावे ।। ९ ।।

शुभ मुहूर्त्त में निकलें हम दिग्विजय यात्रा करने को।
सबसे पहले पूर्व दिशा की ओर हमें जाना होगा।।
गंगातट पर बसे हुये राजाओं से मिलना होगा।
इस विजय यात्रा का मकसद उन सबको समझाना होगा।। १०।।

यह भरतक्षेत्र प्राकृतिकरूप से छह खण्डों में बटा हुआ।
फिर खण्डों के भी खण्ड-खण्ड कर दिये अनेकों नृपगण ने।।
सबको अखण्ड करना होगा इस भरत क्षेत्र की गरिमा को।
इस भरतक्षेत्र के गौरव को इस भरतक्षेत्र की महिमा को।। ११।।

खण्ड-खण्ड में बटे हुये हैं ये छोटे-छोटे नृपगण।
आपस में लड़ते रहते हैं बिन कारण ये छोटे नृपगण।।
इन झगड़ों से मतभेदों से खण्डित होता है यह भारत।
हो गये यदी हम सब अखण्ड तो मंडित होगा यह भारत।। १२।।

अर विकास के काम नहीं हो पाते हैं इन खण्डों में।
गंगा जैसी बड़ी नदी बट जाती कई भूखण्डों में।।
उनका बटवारा करने को सब राज्य झगड़ते रहते हैं।
इन नदियों पर फिर बड़े-बड़े रे बाँध नहीं बन सकते हैं।। १३।।

इन बाँधों के बिना सिंचाई कैसे होगी खेतों की।
अरे सिंचाई बिना जुताई कैसे होगी खेतों की।।
फिर अनाज का उत्पादन भी कैसे होगा खेतों में।
अतः विकास के काम नहीं हो पाते हैं इस भारत में ।। १४।।

सभी तरह की सुख सुविधायें तभी मिलेंगी जन-जन को।
जब भरत क्षेत्र विकसित होगा तब शान्ति मिलेगी जन-जन को।
यह भारत जब होगा अखण्ड तब ही इसका विकास होगा।
विकसित होने पर जन-जन को रे इसका लाभ प्राप्त होगा।। १५।।

चक्ररत्न की उपलब्धि ने हमें जगाया है मानों।
यह काम हमें ही करना है यह हमें जताया है मानों।।
यदि नहीं करेंगे हम तो फिर यह कौन करेगा बतलाओ।
रे बुला रहा है हमको यह आओ आओ आओ आओ।। १६।।

कर्मभूमि विकसित करने की जिम्मेवारी हम सबकी।
क्योंकि विकास की सभी प्रक्रिया कुलकर करते हैं पूरी।।
नाभिराय कुलकर ने अबतक अरे बहुत कुछ काम किया।
ऋषभदेव ने उसे बढ़ाया अब बाकी करना हमको ।। १७।।

टुकड़ों-टुकड़ों में बटी हुई भूमि को एक करना होगा।
भरत क्षेत्र के खण्डों को रे हमें एक करना होगा।।

फिर अखण्ड यह भरतभूमि पूरी विकसित करनी होगी।
खेतों अर खलिहानों को भी हरा-भरा करना होगा ।। १८।।

पूरव-पश्चिम उत्तर-दक्षिण सब जगह लोग आवें-जावें।
इसलिये जुटानी होंगी सब आने-जाने की सुविधायें।।
मार्गों का निर्माण कराना होगा सारे भारत में।
रे विकास के कार्य कराने होंगे सारे भारत में।। १९।।

दिग्विजय यात्रा नहीं भरत की इच्छा पूरी करने की।
रे चक्रवर्ती बन जायें भरत यह नहीं बात बस इतनी ही।।
कर्मभूमि का हो विकास अर भरतभूमि भी विकसित हो।
सबको विकास की राह मिले आराम प्राप्त हो जन-जन को।। २०।।

सारे जन अपने जीवन को विकसित करने की राह चुने।
अपने पथ का निर्माण करें अपने विकास का काम करें।।
सबको सुविधायें मिले सभी सब अपने मन का काम चुनें।
सबको पूरी आजादी हो जो चाहे वे बस वही बनें ।। २१।।

भरत बने सम्राट बात बस इतनी नहीं समझना तुम।
भरतक्षेत्र के सभी नागरिक सब सुविधायें प्राप्त करें।।
बस यही चाहता हूँ मैं तो न कोई सुविधा हीन रहे।
रोटी कपड़ा एवं मकान की नहीं किसी को कमी रहे ।। २२।।

है नहीं भावना मेरी यह कि सारी दुनियाँ वश में हो।
मैं तो बस यही चाहता हूँ यह सारा जग स्वाधीन रहे।।
सब मिलकर सम्पूर्ण क्षेत्र को विकसित कर सम्पन्न बने।
रे विकास के कामों में सारे जन भागीदार बने ।। २३।।

हम यही चाहते हैं कि आप प्रस्ताव हमारा स्वीकारें।
अर विकास के कामों में भी हाथ बटाना स्वीकारें।।
अरे आज के ही समान सब राज्य व्यवस्था आप करें।।
बने हमारे सहयोगी सब राज-काज में साथ रहें ।। २४।।

इस यात्रा में सहयोग करें सहयोग करें समझाने में।
इस भरतक्षेत्र को एक अखण्डित करने में सहयोग करें।।
जब हम सब होंगे एक हमारा भरतक्षेत्र विकसित होगा।
हम सब होंगे सम्पन्न हमारा मन भी आनन्दित होगा ।। २५।।

रे पूर्व दिशा के सभी नरेशों के दिल मीठे बोलों से।
जीते भरतेश्वर ने भाई मीठे-मीठे संबोधन से।।
सबने उनका आतिथ्य किया अर लाद दिया है हारों से।
अर अपनी बहिन-बेटियाँ दी सन्मान किया उपहारों से ।। २६।।

इसतरह भरत ने राजाओं को अपनेपन से मोड़ लिया।
सम्बन्ध बनाकर प्रेमभाव से नजदीकी से जोड़ लिया।।
सबको अपना पक्का साथी अर हित का चिन्तक बना लिया।
लड़कर जो मिलता नहीं कभी अपनाकर वह सब प्राप्त किया।। २७।।

अपनापन सच्चा मारग है अपनापन जीवन का साथी।
मानो तेरा स्वागत करने आया है ऐरावत हाथी।।
आया है ऐरावत हाथी तेरा जागा सौभाग्य अरे।
अपना ले इसको जीवन में तो ही तेरा सौभाग्य जगे ।। २८।।

यदि अपनापन अपने में हो तो सम्यग्दर्शन होता है।
यदि अपने को अपना जानें तो सम्यग्ज्ञान महकता है।।

अर अपने में ही रम जावे जम जावे केवल अपने में।
यह ही भाई है आत्मध्यान इसको ही चारित कहते हैं ।। २९।।

यह सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित प्रगटे इस मानव जीवन में।
तो देर नहीं है फिर भाई भव से मुक्ति के मिलने में।।
अपनापन मुक्तिमारग है अपने में अपनापन ही तो।
मुक्ति है मुक्ति मारग है यह सब अनन्त सुखमय ही है ।। ३०।।

दिग्विजय यात्रा नहीं अरे यह तो एकत्व हमारा है।
अरे संगठित करने का मंगल अभियान हमारा है।।
रे रहे अखण्डित भरतक्षेत्र यह एक हमारा नारा है।
रे अखण्ड भारत ही तो बस हमको सबसे प्यारा है ।। ३१।।

अरे चक्रवर्तित्व हमारा ध्येय नहीं उद्देश्य नहीं।
बस हो अखण्ड यह भरतक्षेत्र है एकमात्र उद्देश्य यही।।
अरे हमारे साथ सभी आवे बस यही चाहते हम।
हम एक रहें हम एक रहें बस एक मात्र यह चाहें हम ।। ३२।।

इसी तरह दक्षिण-पश्चिम के राजाओं को याद किया।
अरे अखण्डित होने का उन सबको भी सन्देश दिया।।
उनको सब बातें समझाई सन्देश दिया नजदीकी का।
वात्सल्य भाव से प्रेरित कर सन्देश दिया अपनेपन का ।। ३३।।

उन सबसे जुड़ने की अपील अत्यन्त सरल परिणामों से।
सभी तरह आश्वस्त किया सन्मान किया सद्भावों से।।
उन सबको बात समझ आई उत्साहित होकर सब आये।
जुड़ना सबने स्वीकार किया सब अपनेपन से ही आये ।। ३४।।

सबने उनका आतिथ्य किया अर लाद दिया है हारों से।
अर अपनी बहिन-बेटियाँ दी सन्मान किया उपहारों से।।
भरतराज ने उन सबको वात्सल्यभाव से अपनाया।
आतिथ्य सभी का स्वीकारा और गले से लगा लिया ।। ३५।।

तीन खण्ड में विद्यमान सब मुकुटबद्ध सोलह हजार।
राजाओं के दिल को जीता वात्सल्यभाव से समझाकर।।
प्रेमभाव से अपनाकर सबको ही अपना बना लिया।
अर एक बूँद भी खून बहाये बिना सभी को जीत लिया ।। ३६।।

अरे एकता से विकास की सीमाओं को समझाकर।
अर अखण्डता की असीम शक्ति की महिमा बतलाकर।।
सबके मन को उल्लसित किया प्रिय वचनों से सन्तुष्ट किया।
सबके मन को मन से जीता सबके मन को सन्तुष्ट किया।। ३७।।

(दोहा)

तीन खण्ड को इसतरह, जीते भरत नरेश।
अर्द्धविजय पूरी हुई, हुआ नहीं संक्लेश।। ३८।।

ऋषभदेव भगवान के दर्शन के शुभभाव।
मन में जागे भरत के थुति करने के भाव।। ३९।।

मध्यरात्रि में ही गये दर्शन को भरतेश।
भक्ति करने का अरे था उल्लास विशेष।। ४०।।

-●-

छहढाला प्रवचन

संवर भावना

जिन पुण्य-पाप नहिं कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिनही विधि आवत रोके, संवर लहि शिव अवलोके।।१०।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो पुण्य-पाप भाव नहीं करते और आत्मा के अनुभव में ही चित्त को लगाते हैं; वे कर्मों को आने से रोकते हैं तथा संवर प्राप्त करके साक्षात् सुख का अनुभव करते हैं।

इस भावना में संवर तत्त्व के स्वरूप का विचार किया जाता है। जिसप्रकार आस्रवों के स्वरूप का चिन्तवन करके जीव उनसे विरक्त होता है; उसीप्रकार संवर के स्वरूप का चिन्तवन करके, उसे सुखरूप जानकर जीव संवररूप परिणमता है, यही सच्ची संवर भावना है।

समयसार के संवर अधिकार में आचार्यदेव ने यह बात बहुत सुन्दर ढंग से समझाई है। उपयोग में उपयोग है, उपयोग में क्रोधादि नहीं है - इसप्रकार भेदज्ञान द्वारा जो जीव दोनों की भिन्नता जानकर उपयोगस्वरूप शुद्ध आत्मा का अनुभव करता है; वही जीव संवररूप परिणमित होता हुआ रागादि के अंश को भी अपने उपयोग में नहीं मिलाता।

आचार्यदेव समयसार गाथा १८३ में लिखते हैं -

विपरीतता से रहित इस विधि जीव को जब ज्ञान हो।
उपयोग के अतिरिक्त कुछ भी ना करे तब आत्मा।।

देखो ! यह संवर भावना है। संवर में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के राग

का अभाव है, इसलिए कहा है, "**जिन पुण्य-पाप नहिं कीना**" पुण्य-पाप नहीं किया तो क्या किया ? "**आतम अनुभव चित दीना**" अर्थात् आत्मा के अनुभव में उपयोग लगाया। पुण्य-पाप से पार शुद्ध उपयोग द्वारा आत्मा का अनुभव होता है और इसी अनुभव से कर्मों का संवर होता है।

भेदज्ञान द्वारा संवररूप परिणमित धर्मात्मा अपने शुद्ध-उपयोग के अलावा पुण्य-पाप आदि किसी भी अशुद्धभाव को अपने स्वभावरूप अनुभव नहीं करते अर्थात् उसके कर्ता नहीं होते। शुभराग से संवर नहीं होता; अपितु उसके अभाव से संवर होता है। मोक्षमार्ग वीतरागभाव स्वरूप है, अत: वीतरागभाव से ही मोक्षमार्ग में ऊँचा चढ़ा जाता है, पुण्य-पापरूप रागभाव से नहीं। अज्ञानी जीव आत्मा को भूलकर, राग में धर्म मानकर शुभराग से स्वर्ग में भी चला जाता है; परन्तु इससे वह ऊँचा नहीं चढ़ जाता। संसार में जरूर ऊँचा चढ़ गया; परन्तु धर्म में नहीं, मोक्षमार्ग में नहीं।

अरे भाई ! सर्वज्ञ भगवान वीतरागी हैं, उनका बताया हुआ मार्ग वीतरागी है, उस मार्ग में राग से कल्याण कैसे होगा ? यदि तू राग को हित का साधन मानता है तो तूने वीतरागी मार्ग को जाना ही नहीं, तू संसार के प्रेम में ही पड़ा है। यहाँ तो स्पष्ट कहा है कि जो पुण्य-पाप रहित आत्मा का अनुभव करते हैं, वे ही सुख प्राप्त करते हैं और उन्हें ही संवर होता है।

जो जीव बुद्धिमान हैं, धर्मात्मा हैं, सम्यग्दृष्टि हैं, वे शुद्धोपयोग द्वारा अपने ज्ञान को आत्मानुभव में एकाग्र करते हैं तथा अशुभ और शुभ दोनों को छोड़ते हैं, उन्हें सुखदायक संवर होता है। यही मुक्ति का मार्ग है।

बहुत से लोग पूछते हैं कि हमें क्या करना चाहिए ? तो श्रीगुरु कहते हैं कि राग से चित्त हटाकर राग रहित शुद्धात्मा में चित्त को जोड़ो, यही धर्म है और सुखी होने का उपाय है ? शुभराग होता अवश्य है; परन्तु उसमें चित्त जोड़ने जैसा नहीं है; क्योंकि उसमें सुख नहीं है। अन्तर में राग रहित अत्यन्त सुन्दर चैतन्यतत्त्व है, वह सुख से भरपूर है, इसलिए उसमें चित्त

जोड़ना चाहिए – इसप्रकार एक बार आत्मा को लक्ष्य में ले ही ले..उसमें अन्तर्मुख होकर उसकी श्रद्धा तो कर, उसकी श्रद्धा करते ही मिथ्यात्वादि अनन्तकर्मों का आस्रव रुक जायेगा और उस स्वभाव में एकाग्र होकर शुभाशुभ भावों का निरोध करने पर सर्व कर्मों का निरोध होकर पूर्ण संवर हो जाएगा। संवर प्रगट करने की यही रीति है।

जो पुण्य अर्थात् राग को ही संवर का कारण मानता है, वह राग से भिन्न आत्मा का ध्यान कैसे करेगा? पुण्य हो या पाप, शुभराग हो या अशुभराग – दोनों ही कषाय हैं, उनसे भिन्न आत्मा का अनुभव ही मोक्ष-सुख का कारण है।

अनुभव चिन्तामणिरतन, अनुभव है रसकूप।
अनुभव मारग मोक्ष को, अनुभव मोक्ष स्वरूप ॥

अरे ! जिस भाव से आत्मा का सुख न मिले, भव-भ्रमण का दु:ख न टले, वह भाव किस काम का ? जिसे राग रहित आत्मा की बात नहीं रुचती और राग की बात रुचती है, उसे जन्म-मरण का अन्त कैसे आएगा? राग का फल तो संसार है। आत्मा को समझे बिना देव भी हो जाए तो उससे आत्मा को क्या लाभ है ? जिसने चार गति के कारणरूप मिथ्यात्व भावों को छोड़ा और राग रहित चैतन्य स्वभाव की भावना से मोक्ष के कारणभूत सम्यक्त्व भाव प्रगट किया, उसे ही शुद्धस्वभावरूप संवर प्रगट होता है, कर्म रुकते हैं और वही परम सुख का अनुभव करता है।

ज्ञान, आनन्द आदि वैभव से भरपूर आत्मा स्वयं महान परमेश्वर पदवाला है। जो अपनी महानता को भूलकर परपदार्थों और राग को महान मानता है, उसे परपद की रुचि है, इसलिए राग का भिखारी बनकर संसार में भटकता है। भगवान होकर भी भव-भव में भटकता है। भगवान! तुझे यह शोभा नहीं देता। जगत् को आत्मा के अनुभव से होनेवाले महान सुख की अचिन्त्य महिमा की खबर नहीं है। शुभराग तो आस्रव का कारण है, संवर का कारण

तो वीतरागता है। दोनों की बात जुदी है, मार्ग जुदा है। इस जुदाई को जानकर स्वरूप का चिन्तन करने से परिणामों में विशुद्धता बढ़ती है, वैराग्य बढ़ता है तथा स्वरूप में एकाग्रता होकर संवर प्रगट होता है। इसमें वीतरागता का महान पुरुषार्थ है। जिसे राग रहित चैतन्यपद की रुचि भी नहीं होती, उसे उसमें एकाग्रता का वीतरागी पुरुषार्थ कैसे जागृत होगा ? जिसे राग की रुचि है, वह उसमें से अपना चित्त हटाकर आत्मा के अनुभव में क्यों जोड़ेगा ?

यहाँ तो कहते हैं कि यदि तुझे संवर करना हो तो अपने चित्त को आत्मा के अनुभव में जोड़ और पुण्य-पाप को छोड़। सम्यग्दृष्टि गृहस्थ भी आत्मा के अनुभव में चित्त को जोड़ते हैं। वे भी कभी-कभी पुण्य-पाप से उपयोग हटाकर निर्विकल्प शुद्धोपयोग द्वारा आत्मा के अनुभव में चित्त को एकाग्र करते हुए अतीन्द्रिय सुख का अवलोकन करते हैं अर्थात् साक्षात् अनुभव करते हैं। यह बात मात्र मुनियों के लिए नहीं है, उन्हें शुद्धात्मा का प्रचुर संवेदन है, इसलिए उनकी बात मुख्य है। गृहस्थ धर्मात्माओं को ऐसा अनुभव कभी-कभी और अल्प होता है, अत: उनकी बात गौण है। **(क्रमश:)**

मंगल समाचार *देखना ना भूलें*

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के ग्रंथाधिराज समयसार (निर्जराधिकार) पर प्रवचनों का प्रसारण

अब अरिहन्त चैनल पर

15 जुलाई, 2020 से प्रतिदिन प्रात: 6:10 से 6:40 तक

अरिहन्त चैनल उपलब्ध है
Tata Sky - 1067
Airtel - 687
Dishtv - 1107
GTPL - 568
Dish Free to air - 79
Hethway - 840

इसका पुन: प्रसारण ptst के यूट्यूब चैनल पर भी दोपहर 2:30 बजे से 3:00 बजे तक किया जायेगा। यूट्यूब पर ही 3 से 4 बजे तक प्रवचनसार का प्रवचन पहले की भांति चलता रहेगा।

नियमसार प्रवचन –

जीव स्वयं प्रतिक्रमण ही है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९१ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

मिच्छादंसणणाणचरित्तं चइऊण णिरवसेसेण।
सम्मत्तणाणचरणं जो भावइ सो पडिक्कमणं।।९१।।

(हरिगीत)

ज्ञानदर्शनचरण मिथ्या पूर्णत: परित्याग कर।
रतनत्रय भावे सदा वह स्वयं ही है प्रतिक्रमण।।९१।।

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र को पूर्णत: छोड़कर जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को भाता है, वह जीव स्वयं प्रतिक्रमण ही है।

(गतांक से आगे....)

भाई! मनुष्य भव पाकर आत्मा की पहचान करना ही शरणभूत है, इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी शरणभूत नहीं है। अहो! युवा मनुष्य भी क्षण में मरण को प्राप्त हो जाता है। चैतन्य का भान करके यदि उसकी शरण न ली तो यह मनुष्य देह तो क्षणमात्र में नष्ट हो जावेगी; अतः ऐसे आत्मा की प्रतीति करना ही परम श्रेयस्कर है।

भगवान आत्मा त्रिकाली वस्तु है, उसकी त्रिकाली शक्ति में कभी आवरण होता ही नहीं। सिद्ध और निगोद – ये दोनों तो अवस्थायें हैं; अवस्था में आवरण था और टल गया, ये दोनों क्षणिक हैं; किन्तु आत्मा ध्रुव त्रिकालीवस्तु है, उसमें आवरण कभी होता ही नहीं – ऐसे कारण-परमात्मा के सन्मुख होकर उसका श्रद्धान-ज्ञान-आचरण करना निश्चय-रत्नत्रय है और ऐसे स्वभाव से विमुखता करना ही मिथ्याश्रद्धा-ज्ञान-रमणता

है और छोड़ने योग्य है। जो भगवान परमात्मा के सुख के अभिलाषी परमपुरुषार्थपरायण (परमतपोधन) शुद्धरत्नत्रयात्मक आत्मा को भाते हैं, वे परमतपोधन ही (शास्त्र में) निश्चय-प्रतिक्रमणस्वरूप कहे गये हैं।

'मैं त्रिकाली भगवान हूँ'- ऐसी भनकार जगे बिना प्रगट भगवान नहीं हो सकते; अतः 'मैं ही त्रिकाल भगवान हूँ'- इसप्रकार अन्तर में श्रद्धा-ज्ञान करके अपने त्रिकाली भगवान की भनकार तो लावो!

जो परमात्म-सुख के अभिलाषी हैं और परमपुरुषार्थपरायण हैं – ऐसे परमतपोधन मुनिराज अपने शुद्धरत्नत्रयात्मक अभेद आत्मा को भाते हैं, वे ही निश्चय-प्रतिक्रमण हैं।

प्रतिक्रमण का अर्थ है पीछे फिरना। किसको सामने देखकर पीछे लौटना? अपने शुद्धरत्नत्रयस्वरूप अभेद आत्मा की भावना द्वारा मिथ्या-श्रद्धान-ज्ञान-चारित्र से पीछे लौटना।

यहाँ तो कहते हैं कि चैतन्यस्वभाव का श्रद्धान-ज्ञान-चारित्र करके जो जीव पुण्य-पाप से पीछे फिरा, उसे पुनः भव नहीं होता अर्थात् वह निश्चयप्रतिक्रमण है।

(वसंततिलका)

त्यक्त्वा विभावमखिलं व्यवहारमार्ग-
रत्नत्रयं च मतिमान्निजतत्त्ववेदी।
शुद्धात्मतत्त्वनियतं निजबोधमेकं।
श्रद्धानमन्यदपरं चरणं प्रपेदे।।१२२।।

(दोहा)

जानकार निजतत्त्व के तज विभाव व्यवहार।
आत्मज्ञान श्रद्धानमय धरें विमल आचार।।१२२।।

समस्त विभाव को तथा व्यवहार मार्ग के रत्नत्रय को छोड़कर निज-तत्त्ववेदी (निज आत्मतत्त्व को जाननेवाला-अनुभव करनेवाला) मतिमान

पुरुष शुद्ध आत्मतत्त्व में नियत (शुद्धात्म-तत्त्वपरायण) ऐसा जो एक निज-ज्ञान, दूसरा श्रद्धान और फिर तीसरा चारित्र - उसका आश्रय करता है।

यहाँ समस्त विभाव छोड़ने के लिये कहा है, उसमें व्यवहार-रत्नत्रय भी आ जाता है, फिर भी यदि कोई जीव व्यवहाररत्नत्रय को मोक्ष का कारण मान ले, तो उसके लिये विशेष रूप से भिन्न करके कहा कि समस्त विभाव की भाँति व्यवहाररत्नत्रय को भी छोड़ना। जो बुद्धिमान निज परमतत्त्व के जाननेवाले हैं, वे समस्त विभाव के साथ व्यवहार-रत्नत्रय को भी छोड़कर शुद्धात्मतत्त्व में ही नियत ऐसा ज्ञान, उसकी परमश्रद्धा और उसमें ही आचरण का आश्रय करते हैं - ऐसा प्रतिक्रमण धर्मात्मा को सदा चौबीस घन्टे होता है, प्रतिक्रमण सुबह-शाम ही होता हो - ऐसा नहीं है।

यहाँ तो कहते हैं कि जिसने चैतन्यस्वभाव में श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता की, उसको सदा प्रतिक्रमण है, उसे प्रतिक्रमण में एक समय का भी विरह नहीं होता। त्रिकालशुद्ध चैतन्यमूर्ति आत्मा में दर्शन-ज्ञान और एकाग्रता ही निश्चयध्यान है, वही निश्चयप्रतिक्रमण है, वही निश्चयसामायिक है। व्यवहार में सामायिक और प्रतिक्रमण आदि का अनेक प्रकार से वर्णन आता है; परन्तु निश्चयशुद्धात्मा का श्रद्धा-ज्ञान करके, उसमें स्थिर होने पर समस्त इन्द्रजाल संकुचित हो जाता है। निजतत्त्व के अवलम्बन में सामायिक, प्रतिक्रमण, आलोचना आदि सब समा जाते हैं।

मुनि को निद्रावस्था में भी चैतन्य के आश्रय से जितनी वीतरागी परिणति है, उतना प्रतिक्रमण है। उन्हें चैतन्य के आश्रय से जो परिणति जितनी प्रगट हुई है, उतना निश्चय-प्रतिक्रमण सदा वर्त्तता है। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

वीर्य शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

भाई! तेरी चैतन्यवस्तु में अनन्तगुण लक्ष्मी का भण्डार भरा है, उसको देखने के बदले बाहर की धन-संपत्ति को देखकर तू हर्षित होता है, परन्तु उसमें तेरा क्या है? वह तो पुद्गल है।

आहाहा....! अति-तृष्णावंत बड़े-बड़े करोड़पति/अरबपति मरकर क्षणभर में नरकादि खोटी गति में चले जाते हैं। भाई! तुझे सुखी होना हो तो अन्दर स्वरूप में नजर कर, स्वरूप का अनुभव कर!

आज तो धर्म के नाम पर व्रत करो, प्रतिमा ले लो, उपवास करो, इसप्रकार प्ररूपणा चलती है; परन्तु इसमें तो धर्म का अंश भी नहीं है। यह तो समस्त राग की क्रियायें हैं।

अरे भगवान! जैसी तेरी चैतन्यवस्तु है, तुझे उसका वैसा अनुभव ही नहीं हुआ तो धर्म कहाँ से होगा और स्थिरता कहाँ से आवेगी? बाहर के क्रियाकर्म द्वारा तू धर्म होना मानता है; परन्तु बाहर का कार्य तेरे हाथ में है कहाँ? न तू उसे कर सकता है और न छोड़ सकता है, वह तो जड़ परमाणु की दशा है। पुण्य-पापरूप भावकर्म/विकारी दशा है। वह तेरी शक्ति का कार्य नहीं है।

तेरी शक्ति का कार्य तो निर्मल सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागी

धर्म तथा केवलज्ञान और सिद्धपद है। आत्मा स्वयं स्वतंत्रपने अपने वीर्य द्वारा अपनी निर्मल पर्यायों की रचना करता है। उन निर्मल पर्यायों की रचना कोई ईश्वर करता हो – ऐसा नहीं है, कोई परद्रव्य करता हो – ऐसा भी नहीं है।

आहाहा....! **आत्मा स्वयं ही स्वयं के स्व-वीर्य से कर्ता आदि षट्कारकरूप होकर अपनी सम्यग्दर्शन आदि निर्मल पर्यायों को करनेवाला ईश्वर है – अन्य कोई दूसरा नहीं।**

भाई! तेरे सर्वज्ञस्वभाव में विद्यमान वीर्यशक्ति के रूप की क्या बात करें? वह तो एक समय में समस्त लोकालोक की भूत, भविष्य एवं वर्तमान की समस्त पर्यायों को एक साथ जानता है, ऐसी ताकत उसमें है, ज्ञान में वीर्य का रूप है न! ऐसी सर्वज्ञशक्ति आत्मद्रव्य में त्रिकाल विद्यमान है।

यहाँ कोई कहे कि वर्तमान प्रगट वर्तती पर्याय को तो सर्वज्ञ भगवान जानते हैं; परन्तु भूत और भविष्य की पर्यायों को नहीं जानते; लेकिन ऐसा कहनेवाले की यह बात सही नहीं है, मिथ्या है। उसे अपने सर्वज्ञ स्वभाव के स्वरूप और सर्वज्ञ भगवान के दिव्यज्ञान की खबर नहीं है।

अरे! जो सर्वज्ञ का स्वरूप भी सही नहीं जानते, विपरीत मानते हैं; उन्हें आत्मा की प्रतीति कहाँ से हो?

अरे भाई! **जिसप्रकार 'परमाणु एक समय में चौदह राजू लोकाग्र तक गमन करता है' यह कथन परमाणु की गति के वीर्य का सूचक है; इसीप्रकार भगवान सर्वज्ञदेव एक समय में त्रिकालवर्ती सर्व लोकालोक को साक्षात् जानते हैं, यह उनकी सर्वज्ञत्वशक्ति के वीर्य का सूचक है।** आहाहा....! ऐसा दिव्यज्ञान भगवान केवली के होता है।

आत्मा में ऐसी अचिन्त्य दिव्य सर्वज्ञत्वशक्ति के साथ वीर्यशक्ति का

रूप है। आत्मा की प्रत्येक शक्ति में अन्य समस्त शक्तियों का रूप होता है। इसप्रकार ज्ञान, दर्शन, सुख, प्रभुता, सर्वज्ञत्व, सर्वदर्शित्व आदि अनन्तगुणों में वीर्यशक्ति का रूप होता है। जैसे ज्ञानवीर्य, दर्शनवीर्य, सुखवीर्य इत्यादि।

अहो! ऐसी अनन्त शक्तियों का सागर प्रभु आत्मा है। उसके सम्मुख दृष्टि करने से वीर्यशक्ति स्फुरायमान होकर अनन्त गुणों की निर्मलपर्यायों की रचना करती है। इसी का नाम आत्मवीर्य है।

जगत के लोगों को इस विषय का अभ्यास नहीं है; इसलिए मात्र क्रियाकाण्ड में ही लग रहे हैं, परन्तु इस सम्पूर्ण क्रियाकाण्ड में तो अकेले राग की और क्लेश की क्रिया है। छहढाला में कहा है कि –

मुनिव्रत धार अनन्त बार, ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायो।।

पंच महाव्रत का अनन्त बार पालन करने पर भी आत्मज्ञान बिना लेश भी सुख नहीं हुआ अर्थात् दुःख ही हुआ।

तात्पर्य यह है कि **पंचमहाव्रत के परिणाम भी अतीन्द्रिय सुखरूप नहीं हैं। अतः वह आत्मा का वीर्य नहीं है। स्वरूपलीनता और स्वरूप एकाग्रता द्वारा निर्मलरत्नत्रय को प्रगट करने का नाम ही आत्मा का वीर्य है और यही पुरुषार्थ है।** (क्रमशः)

डॉ. भारिल्ल की पद्य रचनाओं के ऑडियो तैयार

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 1. समाधि का सार, 2. दो तरह के भगवान, 3. सहजता, 4. यही है ध्यान यही है योग, 5. जिसमें मेरा अपनापन है, 6. न बदलकर भी बदलना, 7. कोई किसी का क्यों करे आदि पद्य रचनाओं के ऑडियो डॉ. गौरवजी सौगानी एवं दीपशिखाजी जैन के मधुर स्वर में तैयार हो चुके हैं। शीघ्र ही वीडियो भी तैयार होकर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किये जायेंगे।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : भावलिंगी मुनि को छठे गुणस्थान में शुभभाव आता है। क्या वह भी मोक्षमार्ग है? क्या उसे वह श्रेयस्कर-सुखकर लगता है? यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर : भावलिंगी मुनि को छठे गुणस्थान में महाव्रतादि का शुभराग आता है-वह प्रमाद है, शास्त्र में उसे जगपंथ कहा है; वह मोक्षपंथ मोक्षमार्ग नहीं है। स्वरूप में ठहर जाना ही मुनिदशा है, उसमें से निकलकर शुभराग में आना मुनि को सुहाता नहीं है। जिसप्रकार चक्रवर्ती को अपने सुखदायी महल से बाहर आना रुचता नहीं है; उसीप्रकार चैतन्य महल में जो विश्रान्ति से बैठा है, उसे वहाँ से बाहर निकलना पसन्द नहीं आता। अशुभराग तो पापरूप जहर है ही; परन्तु शुभराग भी दु:खरूप बंधन है।

आत्मा अतीन्द्रिय ज्ञानानन्द की मूर्ति है, जिसे ऐसे निजस्वरूप की पहिचान हुई है, उसे फिर स्वरूप से बाहर निकलने की इच्छा नहीं होती। जिसकी 96 हजार रानियाँ, 96 करोड़ ग्राम और 16 हजार देव सेवा करने वाले हों - ऐसे बाह्य वैभव में रहनेवाला चक्रवर्ती उस वैभव को मल के समान क्षणमात्र में त्यागकर आनन्द का उग्र स्वाद लेने के लिए वन में चला जाता है। इस अतीन्द्रिय आनन्द का उग्र-प्रचुर स्वाद लेनेवाले को शुभरागरूपी आकुलता में आना कठिन लगता है, भारस्वरूप लगता है; बाहर आना रुचता नहीं। उसे शास्त्र-रचना अथवा उपदेश देने का विकल्प आता तो है; परन्तु वह रंचमात्र भी उसे श्रेयस्कर नहीं मानता, हेय ही मानता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन होने के पश्चात् साधुपने के लिए व्रतादि तो करने पड़ेंगे न?

उत्तर : भाई ! साधुपना कहीं बाहर से अथवा व्रतादि के विकल्पों से नहीं आता; जहाँ अतीन्द्रिय आनन्द की जमावट हो, वहाँ साधुपना है। आनन्द की उग्र

जमावट होने पर व्रतादि के विकल्प भी सहज ही होते हैं; किन्तु अन्तर में स्थिरता का होना ही साधुपना है।

प्रश्न : शास्त्र में कहीं-कहीं अरिहन्त के आत्मा से भी निज-शुद्धात्मा को श्रेष्ठ कहा है, वह कैसे ? अपनी तो अपूर्ण अवस्था है, वह उनकी पूर्णावस्था से भी श्रेष्ठ कैसे ?

उत्तर : निज शुद्धात्मस्वभाव वर्तमान में ही परिपूर्ण है, उसी का ध्यान करने को कहा है, यहाँ त्रिकाल शुद्धस्वभाव की दृष्टि से कथन है, पर्याय यहाँ गौण है। इस आत्मा को अरिहन्त के लक्ष से राग की उत्पत्ति होती है और अपने स्वभाव के लक्ष से वीतरागता की उत्पत्ति होती है; इसलिए इस आत्मा के लिए अरिहन्त श्रेष्ठ नहीं, किन्तु अपना शुद्धस्वभाव ही श्रेष्ठ है। जिनकी ओर से लक्ष छोड़ना है, उनसे तेरा क्या प्रयोजन है ? – सब लक्ष छोड़कर अपने ही चैतन्यस्वभाव का लक्ष कर ! क्योंकि अरिहन्त अवस्था प्रगट होने की सामर्थ्य तो तेरे में ही भरी है, अत: उसे उसी का ध्यान करके उसी में से प्रगट कर; अन्य पदार्थों के ध्यान को छोड़ – ऐसा उपदेश है।

प्रश्न : देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा का विकल्प, उस तरफ का ज्ञान अथवा पंचमहाव्रत के विकल्परूप व्यवहाररत्नत्रय का भाव वास्तव में आत्मा नहीं है – यह तो ठीक; परन्तु वह आत्मा की पर्याय भी नहीं है – यह कैसे हो सकता है?

उत्तर : उस व्यवहार रत्नत्रय की पर्याय के साथ आत्मा की अभेदता नहीं है। ज्ञान की अवस्था होती है, वही आत्मा की पर्याय है और वह ज्ञान आत्मा के साथ अभेद होने से ज्ञान ही आत्मा है और राग अनात्मा है। सम्यग्दर्शन के पूर्व कषाय की मन्दता से विशुद्धिलब्धि भले हो; परन्तु वह आत्मा नहीं है और सम्यग्दर्शन का वास्तविक कारण भी नहीं है, वह तो राग है। राग की आत्मा में अभेदता नहीं है; अत: वह वास्तव में आत्मा की पर्याय नहीं। रागादिभाव खरगोश के सींग की तरह जगत् में होवें ही नहीं – ऐसा नहीं हैं; वे तो आत्मा की पर्याय में एकसमयवर्ती सत्रूप हैं; परन्तु आत्मा के त्रिकालीस्वभाव की अपेक्षा वे असत् हैं। ●

समाचार दर्शन -

ऑनलाइन जिनदेशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव संपन्न

● देश के विभिन्न जिनमंदिरों से अभिषेक-प्रक्षाल के पश्चात् नन्दीश्वर विधान ● आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन ● प्रतिदिन 6 घंटे वरिष्ठ व प्रतिभाशाली युवा विद्वानों के प्रवचन, गोष्ठी व उद्बोधन ● प्रतिदिन बाल-युवा कक्षा, भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन ● प्रतिदिन सिद्धक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र व शिक्षा संकुल की वीडियो यात्राओं का लाभ ● महोत्सव में कुल 120 विद्वानों का लाभ ● 9 दिनों तक प्रतिदिन 11 घंटे लाइव टेलिकास्ट ● 9 दिनों में कुल 12 देशों के 1,45,431 डिवाइस पर लगभग 3 लाख लोगों ने यूट्यूब पर लाभ लिया ● ज़ूम एप पर प्रतिदिन 250 डिवाइस पर लाभ लिया।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर अष्टाह्निका पर्व में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 जून से 5 जुलाई तक ऑनलाइन जिन-देशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव एवं श्री नन्दीश्वर द्वीप मण्डल विधान आयोजित हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विद्वानों प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन हुए प्रवचनों के आधार पर प्रश्नमंच का भी आयोजन किया गया।

महोत्सव में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा एवं डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के वीडियो प्रवचन भी हुये। प्रतिदिन विभिन्न मंदिरों से जिनेन्द्र-अभिषेक का प्रसारण, बाल एवं किशोर वर्ग हेतु कक्षाएं, अनेक तीर्थों व शिक्षा संकुलों का परिचय और वीडियो यात्रा प्रसारण, अनेक ज्ञानवर्धक संगाष्ठियों का आयोजन, अनेक महानुभावों द्वारा जिनवाणी विराजमान करने का लाभ, अनेक महानुभावों द्वारा जिनेन्द्र-भक्ति, आध्यात्मिक कवि सम्मेलन, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि भी आयोजित हुये।

ज्ञानवर्धक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 29 जून को '**श्री मोक्षमार्गप्रकाशक**', दिनांक 2 जुलाई को '**श्रावकाचार**', दिनांक 4 जुलाई को '**छहढाला**' एवं दिनांक 6 जुलाई को '**वीरशासन जयंती**' विषय पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जेवर द्वारा पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के सहयोग से हुए।

वीरशासन जयंती – दिनांक 6 जुलाई को वीरशासन जयन्ती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: पण्डित ऋषभकुमारजी, डॉ. विवेकजी और श्री सचिनजी के निर्देशन में वीरशासन जयन्ती की प्रासंगिक पूजन, पूज्य गुरूदेवश्री का प्रासंगिक सीडी व्याख्यान एवं एनीमेशन द्वारा भगवान महावीर के गर्भ, जन्म और तप कल्याणक का प्रदर्शन किया गया।

तत्पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट का प्रासंगिक व्याख्यान हुआ। दोपहर में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' का वीरशासन जयन्ती पर आडियो प्रवचन हुआ और वीरशासन जयन्ती पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के पश्चात् भगवान महावीर के ज्ञानकल्याणक का प्रदर्शन और दिव्यध्वनि प्रसारण किया गया। समस्त कार्यक्रम विराग शास्त्री के मार्गदर्शन और श्रीमति ममता जैन धर्मपत्नी श्री आई.एस. जैन के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ। रात्रि में डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के वीडियो व्याख्यान के बाद समापन समारोह किया गया और विराग शास्त्री द्वारा गुरूदेवश्री के जीवन पर रचित आल्हा गीत प्रदर्शित किया गया।

कार्यक्रम में देश-विदेश की 28 सभी मुमुक्षु संस्थाओं की सहभागिता हुई। समय-समय पर देश विदेश के मुमुक्षु समाज के प्रतिनिधियों के उदबोधन प्राप्त हुये। मुमुक्षु समाज के इतिहास में पहली बार पूरा समाज एक मंच पर उपस्थित हुआ। प्रतिदिन तीनों समय के स्वाध्याय के पूर्व देश के विभिन्न मुमुक्षु साधर्मियों द्वारा उनके ही घरों में प्रतीक स्वरूप जिनवाणी विराजमान की गई। शाश्वतधाम कन्या निकेतन उदयपुर द्वारा गोष्ठी की अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुति की गई। यह कार्यक्रम निर्देशक विराग शास्त्री जबलपुर, मुख्य समन्वयक पण्डित ज्ञायक शास्त्री वसई मुम्बई और जैनेक्स संगठन के कारण ऐतिहासिक रूप से सफल हुआ।

21वाँ JAANA शिविर संपन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 3 से 5 जुलाई 2020 तक अमेरिका और कनाडा के विविध प्रांतों में फैले हुए आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिये 21वाँ वार्षिक शिविर ऑनलाइन लगाया गया।

शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन विधान एवं दोपहर में बालकों द्वारा विशेष प्रस्तुति के अतिरिक्त एक दिन विद्वानों द्वारा शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

पं.टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती को लक्ष्य में रखते हुए पूरा शिविर पं. टोडरमलजी एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर केन्द्रित रहा, जिसमें लगभग 750 से अधिक लोगों ने लाभ लिया।

सम्पूर्ण शिविर JAANA के डायरेक्टर श्री अतुलभाई-चारु खारा, डॉ. संजीव गोधा, श्री पौरांग-निकेता पारेख, श्रीमती रोशनी सेठी और श्री अनंत-ऋचा पाटनी के निर्देशन में हुआ। श्री क्षितिज-शीतल शाह का विशेष सहयोग रहा।

ऑनलाइन दशलक्षण महापर्व हेतु निश्चित विद्वान

इस वर्ष दशलक्षण महापर्व ऑनलाइन मनाया जायेगा। शासकीय निर्देशों एवं सभी की सुरक्षा के दृष्टिकोण से इस वर्ष दशलक्षण महापर्व सामूहिक रूप से मनाया जाना संभव नहीं है, इसलिये इस वर्ष आपके नगर में विद्वान डिजिटल रूप में पहुंचकर ही लाभ प्रदान कर सकेगा। इसके लिये समाज से दशलक्षण पर्व हेतु टोडरमल स्मारक को प्राप्त निमंत्रण पर विद्वान उस समाज के लिये निश्चित किया जायेगा; समाज और विद्वान परस्पर मिलकर प्रवचन/कक्षा का आयोजन ज़ूम एप पर करेंगे।

आवश्यकतानुसार 100/500/1000 लोगों की ज़ूम आई डी की व्यवस्था समाज द्वारा की जावेगी, जिस आई.डी. पर वहाँ के सारे कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। साथ ही टोडरमल स्मारक द्वारा भी राष्ट्रीय स्तर पर दशलक्षण महापर्व का आयोजन किया जायेगा। इसप्रकार आप स्थानीय एवं टोडरमल स्मारक दोनों ही स्तरों पर आयोजित दशलक्षण महापर्व के सभी कार्यक्रमों में ऑनलाइन सम्मिलित होकर धर्मलाभ ले सकेंगे। महापर्व हेतु आमंत्रण शीघ्र ही डॉ. शांतिकुमारजी पाटील को उनके वाट्सएप नं. 9785649333 पर एवं **ptstjaipur@yahoo.com** पर ईमेल द्वारा भेजने का कष्ट करें।

महापर्व के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर निश्चित विद्वान (ऑनलाइन) निम्नानुसार हैं-

● **जयपुर से ऑनलाइन –** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नीशूजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित आकाशजी शास्त्री अमायन, पण्डित आकाशजी हलाज।

● **सीमंधर जिनालय जवेरी बाजार व दहिसर-मुम्बई :** डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, **दादर व बोरीवली-मुम्बई :** ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, **मलाड-मुम्बई :** पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, **उदयपुर हिरणमगरी :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री व पण्डित खेमचंदजी शास्त्री, **मंदसौर नरसिंहपुरा :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, **अलवर :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, **देवलाली :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना।

इसी प्रकार आपके नगर में भी विद्वान की आवश्यकता (ऑनलाइन) हो तो शीघ्र संपर्क करें। – डॉ. हुकमचंद भारिल्ल (महामंत्री– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

विदेश में निश्चित विद्वान

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा दशलक्षण महापर्व पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा ऑनलाइन प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

श्री सिद्धचक्र विधान सानंद सम्पन्न

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा सर्वोदय अहिंसा यूट्यूब चैनल पर अष्टाह्निका महापर्व पर श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन हुआ।

प्रातः डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा मध्यलोक की कक्षा व आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के वीडियो प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ, जिसके बाद पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित समर्थजी शास्त्री ने उसका सार प्रस्तुत किया। पूजन के पश्चात् तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा जयमाला पर किये गये प्रवचनों का प्रसारण हुआ। साथ ही पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर द्वारा एनीमेशन के माध्यम से पंचमेरु-नंदीश्वर की कक्षा चली।

दोपहर में विभिन्न पाठों के पश्चात् ब्र. सुमतप्रकाशजी के '**अपूर्व अवसर**' विषय पर प्रवचन हुए। इसके बाद मुमुक्षु समाज के दिवंगत विद्वानों में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित लालचंद भाई, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी एवं पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा के वीडियो प्रवचनों का प्रसारण हुआ।

दोपहर में आयोजित दो व्याख्यानमालाओं में पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी जेवर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर एवं सायंकाल पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. अरुणजी बंड, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री बरेली, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित समकितजी शास्त्री खनियाँधाना एवं पण्डित अनेकांतजी शास्त्री रहली द्वारा हुये। साथ ही पण्डित सुनीलजी शास्त्री एवं सुश्री श्वेतल जैन राजकोट ने भी सहयोग दिया। कार्यक्रम का प्रसारण सीए. पीयूष जैन, पण्डित विनीतजी शास्त्री एवं श्री शाश्वत राउत औरंगाबाद द्वारा किया गया। **– संजय सेठी, अध्यक्ष-सर्वोदय अहिंसा**

आगम अभ्यास शिविर संपन्न

उदयपुर (राज.) : समर्पण परिवार द्वारा दिनांक 6 से 12 जुलाई तक ऑनलाइन आगम अभ्यास शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर द्वारा समयसार, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर द्वारा पूजन-पीठिका, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा द्रव्यसंग्रह, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा द्वारा इष्टोपदेश, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा द्वारा भक्तामर स्तोत्र एवं सुश्री विपाशा जैन उदयपुर द्वारा स्तुति विद्या की कक्षा ली गई। शिविर में 524 सदस्यों ने पंजीकरण करवाया तथा लगभग 275 सदस्य प्रत्येक कक्षा में लाभान्वित हुए।

आदर्श दम्पत्ति जैनत्व संरक्षण आभासी (ई) शिविर संपन्न

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ चेतनबाग खनियांधाना के तत्त्वावधान में ब्र. रवीन्द्रकुमारजी 'आत्मन्' अमायन व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मंगल आशीर्वाद, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की मंगल प्रेरणा से पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के मुख्य निर्देशन में श्रीमती रेखा-संजय दीवान परिवार सूरत के विशेष सहयोग से दिनांक 15 से 21 जून तक प्रथम बार आदर्श दम्पत्ति जैनत्व संरक्षण आभासी (ई) शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के लगभग 3500 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर के प्रथम दिन तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई के मुख्य आतिथ्य व श्री अजितजी बड़ौदा व अनुपमा राकेशजी दुबई के विशिष्ट आतिथ्य में शिविर का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. शान्तिजी पाटील, डॉ. संजीवजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, डॉ. मनीषजी शास्त्री, पण्डित विरागजी शास्त्री, ब्र. रानीदीदी का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, पण्डित विकासजी छाबड़ा, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, ब्र.राहुल भैया, पण्डित निखिलजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, ब्र. बासंतीबेन, ब्र. प्रज्ञा दीदी, डॉ. आरती दीदी, ब्र. जीनलबेन, ब्र. एकता दीदी, ब्र. सहजता दीदी, ब्र. प्रियंका दीदी, विदुषी प्रियदर्शनाजी चेन्नई, डॉ. ममताजी ने कक्षाएं संचालित की।

संपूर्ण शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन, स्वाध्याय, विशेष कक्षाएं, आध्यात्मिक पाठ व विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। साथ ही 'हमारा हर घर कैसा हो : एक आदर्श परिवार चयन' नामक कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्र रहा। कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल परिवार जयपुर, पण्डित विमलचंद झांझरी परिवार उज्जैन, श्री महिपाल-धनपाल ज्ञायक परिवार बांसवाड़ा, श्री अशोक-विजय बड़जात्या परिवार इन्दौर, श्री संजय दीवान परिवार सूरत, श्रीमती निशिता-सिद्धार्थ परिवार अमेरिका, श्री प्रदीप चौधरी परिवार किशनगढ आदि सात परिवार साक्षात्कार द्वारा चयनित किये गये। अंतिम दिन समापन समारोह श्री अजितजी बड़ौदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। शिविर में 'बालक पालक की विनय कैसे करें एवं पालक बालक का पालन कैसे करें' यह शिक्षण दिया गया।

संपूर्ण शिविर में पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर, पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल, पण्डित अंकितजी सरल, पण्डित सोमिलजी मोदी, चौ. आकाशजी शास्त्री, आदि अनेक लोगों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। मीडिया प्रभारी दीपकराजजी छिन्दवाड़ा व सचिनजी मोदी खनियांधाना रहे। संपूर्ण शिविर का संयोजन नन्दीश्वर विद्यापीठ के प्राचार्य पण्डित दीपकजी शास्त्री 'ध्रुव' व पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया।

वीरशासन जयंती मनाई

दुबई : यहाँ अरिहंत मित्र मंडल के तत्त्वावधान में वीर शासन जयंती पर प्रात: विशेष पूजन का आयोजन हुआ, सायंकाल अरिहंत ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर के जीवन का परिचय देते हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिसका संचालन अनुश्री शाह ने किया। इस अवसर पर देश-विदेश में प्रसिद्ध गायक गौरव-दीपशिखा जैन जयपुर ने भगवान महावीर की भक्ति करते हुए भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रथम बार ऑनलाइन इन्द्रसभा का आयोजन हुआ, जिसमें 25 इन्द्र-इन्द्राणियों ने आध्यात्मिक चर्चा प्रस्तुत की। इन्द्रसभा का निर्देशन पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने किया।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नीतेशजी शाह ने किया। समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब पर लाइव दिखाया गया, जिससे हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया। अन्त में अरिहंत मित्र मंडल के वरिष्ठ सदस्य श्री पद्मकुमारजी पाटनी ने कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी स्वीटू शाह, जयेश जैन और दीपकराज जैन छिन्दवाड़ा तथा अतिथियों का स्वागत व आभार व्यक्त किया।

90 दिनों में 17 लाख डिवाइस पर धर्म प्रभावना

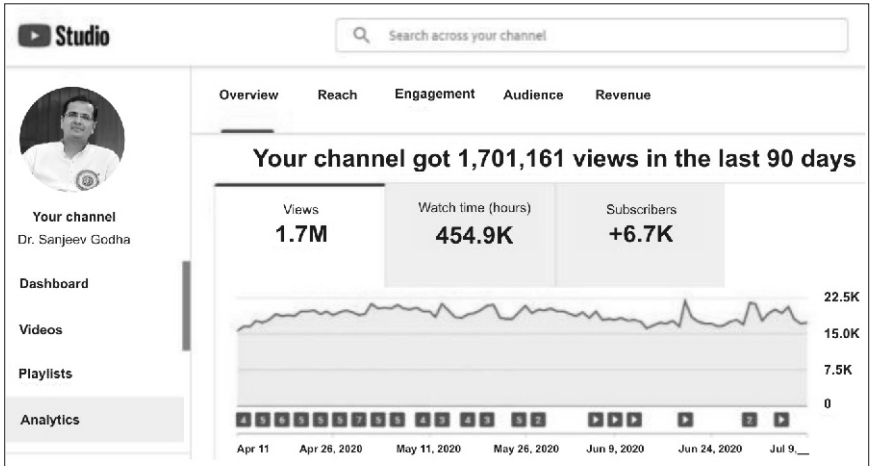

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा पिछले 90 दिनों में नियमित ऑनलाइन प्रवचनों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई, जिसमें मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढाला एवं पुरुषार्थसिद्धिउपाय पर ऑनलाइन प्रवचनों का 57 देशों में 17,01,161 डिवाइस पर 4,54,900 घंटों के प्रवचनों का लाभ लिया गया। सभी प्रवचन dr.sanjeevgodha यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं, जहाँ नियमित 18 से 20 हजार आत्मार्थी प्रतिदिन लाभ लेते हैं। इसके अतिरिक्त भी अनेक यूट्यूब चैनलों, ज़ूम एप एवं वाट्सअप ऑडियो आदि के माध्यम से लाखों लोग लाभान्वित हो रहे हैं। ज्ञातव्य है कि इस लॉकडाउन के समय में गुरुदेवश्री के पुण्यप्रभावना योग में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के शिष्य समुदाय द्वारा लाखों लोगों तक यह तत्त्वज्ञान पहुंचा है और हजारों लोगों का जीवन बदल गया है; यह एक बहुत शुभ संकेत है।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती महोत्सव वर्ष के पावन प्रसंग पर –

43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर का भव्य शुभारंभ

जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित 43वें आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर का भव्य शुभारम्भ रविवार दिनांक 19 जुलाई, 2020 को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि विद्वत्गणों, श्रेष्ठीजनों एवं बड़ी संख्या में ऑनलाइन श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में हुआ।

सौभाग्यशाली परिवार – ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी परिवार जयपुर ने एवं शिविर उद्घाटन श्री अशोककुमार चक्रेशकुमार सुशीलकुमार (मुन्नाभैया) बजाज परिवार कोलकाता ने किया। तत्पश्चात् श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ द्वारा गुरुदेवश्री के चित्रों का अनावरण किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलजी गोदिका ने की। सभा का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, कार्यक्रमों की जानकारी श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, संस्था का परिचय पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं मंगलाचरण पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने किया।

शिविर के सारथी – इसका सौभाग्य श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री अजितप्रसादजी दिल्ली, श्री अशोकजी पाटनी सिंगापुर, श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री राहुलजी महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर, श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी के साथ ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर को प्राप्त हुआ।

समारोह में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री पवनजी स्वप्निलजी जैन अलीगढ, श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर, श्री गजेन्द्रजी पाटनी मुम्बई, श्री विपुलभाई मोटानी मुम्बई, श्री चम्पालालजी भण्डारी बैंगलोर, श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री अशोकजी अरिहंत कैपिटल इन्दौर आदि अनेक श्रेष्ठीगण उपस्थित थे।

विशिष्ट विद्वत्समागम – शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर मार्मिक व्याख्यानों के अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, डॉ.शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित शैलेषभाई, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी, पण्डित रजनीभाई, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया के प्रवचनों व कक्षाओं का लाभ मिला।

समयसार विधान – प्रतिदिन प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'समयसार महामंडल विधान' डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित समकितजी शास्त्री ने संपन्न कराया।

ऑनलाइन चले इस शिविर में प्रतिदिन लगभग 14 घंटे 65 विद्वानों द्वारा बही ज्ञानगंगा में हजारों आत्मार्थियों ने धर्मलाभ लिया। **– जिनकुमार शास्त्री, रूपेन्द्र शास्त्री**

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

कहान सोसायटी में बन रहे फ्लेटों में ब्लॉक बी, सी, डी का कार्य पूर्ण

संपर्क – प्रेमकुमारजी (9754552550)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 जुलाई 2020

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**